देश-काल-पात्र का ज्योतिषीय महत्व

डॉ. सुशील अग्रवाल

विषय प्रवेश

ज्योतिष का आधार कर्म सिद्धांत है जिसके अनुसार मनुष्य को वर्तमान जीवन अपने पूर्व जन्मों के संचित कर्मों के आधार पर, कर्म फलों को भोगने के लिये एवं ऋण से उऋण होने के लिए प्राप्त होता है। जितना फल हमें इस जन्म में भोगना है उसी के आधार पर हमें शरीर, वंश और वातावरण प्राप्त होता है। यही वर्तमान जन्म का भाग्य या प्रारब्ध भी है जो ज्योतिष में जन्मकुंडली में ग्रह-स्थिति द्वारा अंकित होता है।

यही कारण है कि एक ही समय पर अलग-अलग परिवारों में जन्मे व्यक्तियों के भाग्य अलग होते हैं क्योंकि उनका शरीर, वंश और वातावरण अलग-अलग होता है। ज्योतिषीय सन्दर्भ में इसे देश-काल-पात्र कहते हैं जिसका अनुसरण करते हुए ज्योतिषी प्रत्येक जातक का आकलन अलग-अलग प्रकार से करता है। इसकी चूक से फलादेश की कमी होने की सम्भावना बढ़ जाती है। ज्योतिषीय शास्त्रों के अतिरिक्त हिन्दू वैदिक साहित्य ने भी देश-काल-पात्र की महत्ता को माना है।

आधुनिक युग में इन्टरनेट और सोशल मीडिया आदि के अत्यधिक प्रचलन से कोई भी व्यक्ति, दुनिया के किसी भी कोने से, किसी भी ज्योतिषी को भी संपर्क कर सकता है। ज्योतिषी भी इस तकनीकी सुविधा का भरपूर लाभ ले रहे हैं। WhatsApp, फेसबुक और फोन आदि पर सलाह-मशविरा दिया और लिया जा रहा है। ऐसे में कभी-कभी देश-काल-पात्र जैसे ज्योतिष के मुख्य नियम की अनदेखी होनी सम्भव है। इस लेख के माध्यम से ज्योतिष में देश-काल-पात्र के महत्त्व को पुनः पुष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है।

आइए कुछ शास्त्रीय और ज्योतिषीय सन्दर्भ लेते हैं जिससे इस आधारभूत नियम की विश्वसनीयता पर लेश मात्र भी सन्देह न हो।

शास्त्रीय सन्दर्भ

दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे।

देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम् ।।

श्रीमद्भागवत गीता XVII-20 के अनुसार दान देना कर्तव्य मानकर यदि दान उपकार वापिस करने में असमर्थ व्यक्ति को दिया हो या तीर्थ स्थानों में दिया हो या पुण्य काल में दिया हो या योग्य पात्र को दिया हो तो वह दान सात्त्विक है। अर्थात् सही समय और पात्रता का ध्यान अवश्य रखना है।

अदेशकाले यद्दानमपात्रेभ्यश्च दीयते ।

असत्कृतमवज्ञातं तत्तामसमुदाहृतम् ।।

श्रीमद्भागवत गीता XVII-22 के अनुसार जो दान अयोग्य स्थान, योग्य समय और योग्य पात्र को तिरस्कार पूर्वक या अवज्ञा पूर्वक दिया जाता है वह दान तामस कहलाता है। अर्थात् स्थान, समय और पात्र की योग्यता का ध्यान अवश्य रखना है।

ज्योतिष शास्त्रीय सन्दर्भ

ऋषि मन्त्रेश्वर ने फलदीपिका में कहा है :

दशापहारेषु फलं यदुक्तं वर्णाधिकारानुगुणं वदन्तु ।

छिद्रेषु सूक्ष्मेष्वपि तत्फलाप्तिः छायांकवार्ताश्रवणानि वा स्युः।।

दशा-अन्तर्दशा के फल, जातक के वर्ण (पारिवारिक पृष्ठभूमि), अधिकार (स्तर) और गुणों पर विचार करने के बाद कहना चाहिए। प्रत्यन्तर और सूक्ष्म दशा का विचार भी इसी सामंजस्य से करना चाहिए। जातक के व्यक्तित्व (छाया), बातचीत, श्रवण आदि से अनुमान लगाकर भी फल कहे जा सकते हैं। अर्थात् ज्योतिषी को देश-काल-पात्र का महत्त्व समझते हुए जातक से सम्बन्धित सामाजिक मानदंडों को जानना चाहिए, जातक की पारिवारिक स्थिति को समझना चाहिए और जातक से सम्बन्धित जानकारी भी प्राप्त करने के बाद ही कुंडली आकलन करके फलित करना चाहिए।

ऋषि वराहमिहिर ने बृहत्संहिता में देश-काल के महत्त्व पर बल देते हुए कहा है कि देश-काल का ज्ञाता ज्योतिषी वह कार्य कर सकता है जो एक हजार हाथी और चार हजार घोड़े भी नहीं कर सकते। इसके अतिरिक्त, ज्योतिषी को जातक के व्यक्तित्व,

बोलने के तरीके आदि से सक्रिय महादशा (जातक पर महादशा स्वामी की छाया पड़ती है जिससे वह उसके गुण ग्रहण कर लेता है) का भी अंदाजा लगाना चाहिए।

महर्षि पराशर ने स्पष्ट बल अध्याय में कहा है कि जो व्यक्ति देश–दिशा–काल का ज्ञाता हो वही सत्य फलादेश कर सकता है।

इसके अतिरिक्त लगभग सभी ज्योतिषीय शास्त्रों में देश–काल–पात्र का ज्ञान ज्योतिषी होने के गुणों में वर्णित है।

देश–काल–पात्र क्या है ?

देश : देश का अर्थ है स्थान जहाँ जातक पैदा हुआ है। उस स्थान के सामाजिक रीति–रिवाज और समाज के नियम–निर्देश क्या हैं? किसी भी कुंडली का आकलन करने से पूर्व इसकी जानकारी होना अति आवश्यक है। यदि जातक का जन्मस्थान और निवास स्थान अलग–अलग हैं तो दोनों स्थानों की जानकारी होनी चाहिए। निम्न उदाहरणों से समझते हैं –

• जातक विवाहित है और पूछता है कि उसकी दूसरी शादी कब होगी और योग और दशा के अनुसार विवाह के लिए उचित समय है तो भी आप दूसरा विवाह नहीं कह सकते क्योंकि यह वर्जित है, परन्तु यदि जातक मुस्लिम समाज से हुआ तो आप दूसरे विवाह का फलादेश कर सकते हैं।

• इसी प्रकार यूरोप, अमेरिका आदि में सभी विवाह प्रेम–विवाह ही होते हैं और जाति आदि का भी कोई भेद नहीं होता, परन्तु भारत के किसी गाँव में प्रेम–विवाह या अंतर्जातीय विवाह के लिए कुंडली में सम्बन्धित योग देखना आवश्यक है।

• मान लीजिए कि हमें किसी जातिका का अनुमानित विवाह खण्ड निकालना है और कुंडली से हमें लगता है कि जातिका का सामान्य उम्र में विवाह संभव है। यदि जातिका किसी छोटे गाँव के कम पढ़े–लिखे परिवार की अशिक्षित कन्या है तो सामान्य शादी की उम्र 18–21 होगी, वहीं यदि वह किसी बड़े शहर के प्रतिष्ठित परिवार की उच्च–शिक्षित कन्या है तो सामान्य शादी की उम्र 24–27 होगी।

काल : काल का अर्थ कि किस समय अवधि की बात हो रही है। अधिकतर ज्योतिषीय ग्रन्थ प्राचीन समय में लिखे गए थे इसीलिए ज्योतिषीय सूत्रों का आधार प्राचीन समय है। आवश्यकता होने पर, इन सूत्रों को काल के अनुसार उहा–पोह से परिवर्तित करते हुए फलित करना चाहिए। कुछ उदाहरण लेते हैं :

• बृपाहोशा के जायाभावफलाध्याय के श्लोक 22 के अनुसार सप्तमेश शुभग्रह की राशि में हो, शुक्र उच्च या स्वराशि हो तो जातक का विवाह 5वें या 9वें वर्ष में होता है। आधुनिक काल में उक्त योग होने पर भी यह फलित नहीं कर सकते क्योंकि 18 वर्ष से पूर्व कन्या का और 21 वर्ष से पूर्व लड़के का विवाह कानूनन वर्जित है। इसीलिए इस योग को शीघ्र विवाह होना समझना चाहिए और देश–पात्र का ध्यान रखते हुए शीघ्र विवाह आयु खण्ड का निर्धारण या फलादेश करना चाहिए।

• लगभग सभी ज्योतिषीय ग्रन्थों में अनेक ऐसे योग हैं जिनमें जातक का राजा होना कहा गया है, परन्तु आधुनिक युग में कुंडली के योग देख कर उसके राजा होने का फलित तो नहीं कर सकते। आधुनिक काल के अनुसार कहेंगे कि बहुत अधिक धनी आदि होगा ।

पात्र : पात्र से अर्थ है जातक की योग्यता। ज्योतिषी को जातक को योग्यता समझनी चाहिए और उसी प्रकार फलित करना चाहिए। कुछ उदाहरणों के माध्यम से समझते हैं :

• फलदीपिका, राजयोग अध्याय के अनुसार जातक यदि राजवंशी होता है और दो या तीन ग्रह दिग्बल (IV-2) युक्त हैं तो जातक राजा (भूमिपति) होता है जो सदैव विजयशील होता है। आधुनिक युग में यह श्लोक लागू नहीं होगा और हम केवल इतना कह सकेंगे कि दिग्बली ग्रह अपनी दशा में धन, सम्मान और समृद्धि आदि देंगी।

• मान लीजिये कि जातक के द्वादश भाव पर शुभफल की सम्भावना बनती है तो बिना जातक को जाने विदेश जाने का फलित नहीं कर सकते। क्या पता उसके पास न तो कोई साधन हो और न ही किसी प्रकार का मौका।

• द्वादश भाव बंधन कारक होता है। जातक यदि गुंडा तत्व है तो ही जेल जाने की सम्भावना बनेगी अन्यथा सामान्य सामाजिक बन्धन, हॉस्पिटल, खर्चा आदि का ही फलित किया जाता है।

निष्कर्ष : देश–काल–पात्र की जानकारी के लिए ज्योतिषी की सक्षमता और उहा–पोह में निष्पक्षता का बहुत योगदान होता है। देश–काल–पात्र के आधार पर उहा–पोह से जो भी परिवर्तन करें उस पर भली–भांति शोध करके ही निष्कर्ष निकालना चाहिए।

पता : बी– 301, सोम अपार्टमेंट्स,
सेक्टर–6, द्वारका, नयी दिल्ली
मो. 9810162371